Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 SHISRRJ | Volume 7 | Issue 2
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

श्रीमद्भागवत महापुराण में वर्णित राजा अम्बरीष आख्यान

दिवाकर कटारे
शोधार्थी, संस्कृत विभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत।

Article Info

Received : 03 March 2024
Published : 15 March 2024

Publication Issue :
March-April-2024
Volume 7, Issue 2

Page Number : 38-40

शोध सारांश – श्रीमद्भागवत्महापुराण एक भक्तचरित महापुराण है यदि ऐसा कहे तो कुछ अतिश्योक्ति नहीं होगी। नवम स्कन्ध को देखे तो यहाँ आख्यानों की प्रधानता है उन्हीं आख्यानों में एक मुख्य आख्यान है भगवद् भक्त शिरोमणि राजा अम्बरीष की कथा। राजा अम्बरीष को विरासत में पिता की सम्पत्ति तो मिली थी, परन्तु सबसे बड़ा धन जो उसे मिला था वह था– धर्म एवं नीति का धन। आज के पिता को यह ध्यान रखना चाहिये कि अपने पुत्रों के लिए धन–सम्पत्ति भले ही न छोड़ जाये, पर संस्कारों की सम्पत्ति उन्हें जरूर देकर जाये। क्योंकि जीवन संस्कारों से ही संवरेगा। संस्कारों के बिना जीवन में विकृतियाँ लायेगा, जो समाज के लिये हितकर नहीं होगा। इस कथा से हमें यह शिक्षा मिलती है कि सन्त, मुनि एवं ऋषियों को भी अकारण किसी भगवद् भक्त का अपमान नहीं करना चाहिये और ना ही उसे श्रापित करना चाहिये। एक और शिक्षा जो इस कथा से प्रकट होती है वह यह है कि, भगवान के भक्त को अपनी रक्षा की चिन्ता नहीं करनी चाहिए उसे तो निर्भीकता से अपना कर्म करना चाहिए। रक्षा की चिन्ता भगवान स्वंय करते हैं।

मुख्य बिन्दु – राजा अम्बरीष, धर्म एवं नीति, राजनीति, भगवद् भक्त, दुर्वासाऋषि, श्रीमद्भागवतपुराण।

नाभागादम्बरीषोऽभून्महाभागवतः कृती।
नास्पृशद् ब्रह्मशापोऽपि यं न प्रतिहतः क्वचित्।।[1]

मनुपुत्र नभग का पुत्र था नाभाग और नाभाग के पुत्र हुए अम्बरीष। वे भगवान् के बड़े प्रेमी एवं उदार धर्मात्मा थे। जो ब्रह्मशाप कभी कहीं रोका नहीं जा सकता, वह भी अम्बरीष का स्पर्श न कर सका। राजा अम्बरीष बड़े भाग्यवान् थे।

अम्बरीषो महाभागः सप्तद्वीपवर्ती महीम्।
अव्ययां च श्रियं लब्ध्वा विभवं चातुलं भुवि।।[2]

पृथ्वी के सातों द्वीप, अचल संपत्ति और अतुलनीय ऐश्वर्य उनकों प्राप्त था। यद्यपि ये सब साधारण मनुष्यों के लिए अत्यन्त दुर्लभ वस्तुऐं हैं, फिर भी वे इनहें स्वप्नतुल्य समझते थे। क्योंकि वे जानते थे कि जिस धन–वैभव के लोभ में पड़कर मनुष्य घोर नरक में जाता है। वह केवल चार दिन की चाँदनी है उसका

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

दीपक तो बुझा–बुझाया है। भगवान् श्रीकृष्ण में और उनके प्रेमी साधुओं में उनका परम प्रेम था। उस प्रेम के प्राप्त हो जाने पर तो यह सारा विश्व और इसकी समस्त संपत्तियाँ मिट्टी के ढेले के समान जान पड़ती हैं।

स वै मनः कृष्णपदारविन्दयो
र्वचांसि वैकुण्ठगुणानुवर्णने।
करौ हरेर्मन्दिरमार्जनादिषु
श्रुतिं चकाराच्युतसत्कथोदये।।[3]

उन्होंने अपेन मन को श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्द युगल में, वाणी को भगवद्गुणानुवर्णन में, हाथों को श्रीहरिमन्दिर के मार्जन–सेचन में, और अपने कानों को भगवान् अच्युत की मङ्गलमयी कथा के श्रवण में लगा रखा था। उन्होंने अपने नेत्र मुकुन्दमूर्ति एवं मन्दिरों के दर्शनों में, नासिका उनके चरणकमलों पर चढ़ी तुलदीदल के दिव्य गन्ध में और रसना (जिह्वा) को भगवान् के प्रति अर्पित नैवेद्य–प्रसाद में संलग्न कर दिया था।

अम्बरीष को विरासत में संपत्ति तो मिली थी, परंतु सबसे बड़ा धन तो जो उसे मिला था वह था– धर्म एवं नीति का धन। आज के पिता को यह ध्यान रखना चाहिए कि अपने पुत्रों के लिए धन–संपत्ति भले ही न छोड़ जायें पर संस्कारों की संपत्ति उन्हें जरूर देकर जाऐं, क्योंकि जीवन संस्कारों से ही संवरेगा। संस्कारों के बिना वित्त जीवन में विकृतियाँ लायेगा, जो समाज के लिए हितकर नहीं होगा।

अम्बरीष बहुत धर्मात्मा एवं नीतिज्ञ राजा थे उनके राज्य में प्रजा पूर्णतया सुखी थी। दुःखों–अभावों, कलह–क्लेशों का कहीं नामोनिशान नहीं था। ऐसा लगता था जैसे स्वर्ग ही धरती पर उतर आया हो। कहा जाता है कि अम्बरीष के राज्य में कोई स्वर्ग नहीं जाना चाहता था, क्योंकि यहीं पर स्वर्गिक आनंद प्राप्त हो रहा था। अम्बरीष परम ईश्वर भक्त थे। उनका शासन धर्म एवं नीति पर आधारित था। अतः प्रजा का आचरण, सोच एवं व्यवहार भी राजा जैसा ही था। कहा जाता है – यथा राजा तथा प्रजा।

आज के शासन भी यदि पूरी तरह नीति, नैतिकता एवं समर्पित भाव से शासन–व्यवस्था चलायें तो प्रजा भी वैसा ही आचरण करने लगेगी और चारों ओर शांति एवं अमन–चैन हो जायेगा। राजनीतिज्ञों को धर्मशास्त्रों का स्वाध्याय करना चाहिए।

अम्बरीष की कथा में आगे वर्णन आता है कि अम्बरीष का एकादशी का व्रत था। व्रत पूर्ण होने पर ही भोजन किया जाता है। राजा ने ब्राह्मणों को भोजन कराया। दक्षिणा दी फिर उनकी आज्ञा लेकर स्वयं भोजन करने के लिए बैठने ही वाले थे इतने में दुर्वासा मुनि आ पहुँचे। दुर्वासा अति प्रभावी एवं अति क्रोधी मुनि थे। उन्हें आया देखकर अम्बरीष ने उनका स्वागत सत्कार किया। तब दुर्वासा ऋषि ने कहा – मैं स्नान करके आता हूँ तब भोजन करूंगा। अम्बरीष ने काह– 'आप आइये मैं आपकी प्रतीक्षा करूँगा।'

अम्बरीष प्रतीक्षा कर रहे थे, पर दुर्वासा नहीं आये। इधर द्वादशी समाप्त होने को केवल एक घटिका का समय ही बचा था। पारायण द्वादशी में करना ही आवश्यक था, त्रयोदशी लगने वाली थी। बड़ा धर्म–संकट आ खड़ा हुआ। अतिथि को भोजन कराये बिना भोजन करना उचित नहीं था। ब्राह्मणों ने परामर्श दिया कि राजन्। आप व्रत में जल भी नहीं लेते, अतः जल से पारायण कर लीजिये। जल भोजन है भी और नहीं भी है। ब्राह्मणों के कहने पर अम्बरीष ने तुलसीदल लेकर जल पी लिया। इतने में ही दुर्वासा वहाँ आ पहुँचे। उन्हें जब मालूम हुआ कि राजा ने जल से पारायण कर लिया है, तो वे उन पर अति क्रोधित हुए।

दुर्वासा ने कहा 'मुझे निमंत्रित किया था और मुझे भोजन कराये बिना पारायण कर लिया। यह हमारा अपमान है'

अम्बरीष ने कहा कि मैने भोजन नहीं किया है। द्वादशी की अवधि समाप्त हो रही थी, अतः ब्राह्मणों के परामर्श से केवल जल लेकर पारायण किया है, पर दुर्वासा कुछ भी सुनने को तैयार नहीं थे। क्रोध से उन्होंने एक जटा निकाली और उससे अग्नि के समान धधकती एक कृत्या जब अम्बरीष को दग्ध करने आने लगी तो उन्होंने आँखें बन्द कर भगवान् से प्रार्थना की। विष्णुभगवान् ने अम्बरीष की रक्षा हेतु सुदर्शन चक्र तो पूर्व से ही नियुक्त कर रखा था। जैसे ही उन्होंने भगवान् का स्मरण किया, वैसे ही तुरंत सुदर्शन चक्र ने उस कृत्या को जलाकर राख कर दिया और वह दुर्वासा के पीछे पड़ा। यहाँ भागवतकार ने भक्त अम्बरीष की बड़ी महिमा बताई है। सुदर्शन चक्र को अपनी ओर आता देख दुर्वासा भागे, वे न कहीं बैठे सके, न रूक सके। जहाँ भी वे जायें, सुदर्शन उनके पीछे–पीछे जा रहा था। भयभीत होकर वे रक्षा हेतु ब्रह्मदेव के पास गये। ब्रह्मा ने कहा– इससे रक्षा करने की शक्ति मुझमें नहीं है। फिर दुर्वासा शंकर जी के पास गये उन्होंने भी रक्षा करने में असमर्थता दिखायी। अंत में वे विष्णुभगवान् के पास पहुँचे और सुदर्शन से रक्षा करने की याचना की। भगवान ने कहा कि अब तो बात मेरे हाथ से भी निकल गयी है। अब तो आप अम्बरीष के पास जाइये, उनसे ही क्षमा मांगिये। आपने उनका अपराध किया है, वे ही आपको सुदर्शन से बचा सकेंगे। भगवान् अपने भक्त को अपमान सहन नहीं कर सकते। श्रीरामचरितमानस में गुरू बृहस्पति ने इन्द्र को चेतावनी देते हुए कहा है–

जो अपराधु भगवत कर करई। राम रोष पावक सो जरई।।
लोकहुँ बेद बिदित इतिहासा। यह महिमा जानहिं दुरबासा।।[4]

दुर्वासा भागे–भागे अम्बरीष के पास आये। अपने अपराध की क्षमा मांगी और सुदर्शन से रक्षा हेतु अनुरोध किया। राजा अम्बरीश ने सुदर्शन की स्तुति की और शांति होने हेतु प्रार्थना की। दुर्वासा चक्र की आगे से मुक्त हो गये। जबसे दुर्वासा भागे थे तब से उनके लौटने तक अम्बरीष ने भोजन नहीं किया था केवल जल पीकर रहे थे। अम्बरीष ने दुर्वासा के चरण धोये उन्हें भोजन कराया, फिर उन्होंने स्वयं भोजन किया। महर्षि दुर्वासा बहुत संतुष्ट होकर वहाँ से ब्रह्मलोक को चले गये।

ये कथा संदेश देती है कि सन्त, मुनि एवं ऋषियों को भ्झी अकारण किसी भगवत्भक्त का अपमान नहीं करना चाहिए और न ही उसे शापित–प्रताड़ित करना चाहिए। एक और बात जो इस कथा से प्रकट होती है वह यह है कि भगवान् के भक्त को अपनी रक्षा की चिंता नहीं करनी चाहिए। उसे तो निर्भीकता से अपना कर्म करना चाहिए। रक्षा की चिंता तो भगवान् करते है गीता में तो भगवान् ने घोषणा की ही है– **'योगक्षेमं वहाम्यहम्।'**[5]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीमद्भागवतमहापुराण 9/04/13
2. श्रीमद्भागवतमहापुराण 9/04/15
3. श्रीमद्भागवतमहापुराण 9/04/18
4. रामचरितमानस 2/218/5–6
5. श्रीमद्भगवद्गीता 9/22